ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 216-218**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-II, Issues-36, YEAR-April-June. 2025

युवाओं में बढ़ता मादक द्रव्य व्यसन

डॉ0 अवधेश तिवारी
असिस्टेंट प्रोफेसर– समाजशास्त्र, सुमित्रानंदन पंत राजकीय महाविद्यालय, गरूड़–बागेश्वर, (उत्तराखण्ड) भारत

Received-29.05.2025, Revised-08.06.2025, Accepted-15.06.2025 **E-mail : awadheshboss105@gmail.com**

सारांशः ***मादक द्रव्य व्यसन एक गम्भीर सामाजिक आर्थिक, वैयक्तिक समस्या के रूप में सम्पूर्ण मानव जाति को प्रभावित कर रहा है। प्राचीन भारतीय ग्रन्थों में मादक पदार्थों को उपविशा, सोमरस, गांजा, देवबूटी, विजया, मदिरा आदि नाम से पुकारा जाता था। प्राचीन ग्रीक सभ्यता द्वारा प्राप्त साक्ष्यों से ज्ञात होता है कि अफीम का प्रयोग लगभग 500 ई0पू0 से चिकित्सा, निश्चेतक, दर्द रहित मृत्यु तथा अनुष्ठान के लिए किया जाता था Paul L.Scheff Jr (2002) / 400 ई0पू0 से 1200 ई0पू0 के बीच अरब के व्यपारियों द्वारा चीन तथा भारत में अफीम का व्यापार किया गया Philip Robson (1999) / दक्षिणी अमेरिका में लगभग 1000 वर्ष पूर्व से वहाँ के लोगों द्वारा कोका पत्ती चबाने की बात सामने आती है Attman AJ, Albert DM, Fournier GA (1985) / रिचर्ड विलस्टेटर द्वारा 1898 में कोकेन आणविक संश्लेषण की व्याख्या की गई Humphrey AJO' Hagan D (2001) / सभी मादक पदार्थों का सेवन प्राचीन काल से मानव समाज द्वारा मौज–मस्ती विलासिता पूजा अनुष्ठान तथा स्नायुमण्डल की प्रभावकता के लिए होता था परन्तु वर्तमान समय में युवा पीढ़ी का आकर्षण विशेष रूप से इन पदार्थो के प्रति बढ़ता जा रहा है जो अत्यन्त चिंता का विषय है।***

कुंजीभूत शब्द– मादक द्रव्य व्यसन, गम्भीर सामाजिक आर्थिक, वैयक्तिक समस्या, उपविशा, सोमरस, गांजा, देवबूटी, विजया, मदिरा

मादक द्रव्य को मूलतः छः भागो में बाँटा जा सकता है। सबसे पहले शराब का नाम आता है। कई देशों में संयमित मात्रा में इसका सेवन समाजिक रूप से अनुचित नहीं माना जाता परन्तु भारत में यह एक समस्या के रूप में दिखाई देता है। शराब एक शान्तिकारक पेय पदार्थ के रूप में कार्य करते हुए नसों को शान्त एवं संवेदनहारी बनाते हुए तनाव को कम करता है। यह द्विविधा उत्पन्न करती है तथा अत्यधिक सेवन से निर्णय लेने की क्षमता मन्द होने लगती है।

इसका बहुत समय तक सेवन यकृत को प्रभावित करता है। दूसरे स्थान पर शामक या अवसादक मादक द्रव्य होते है जिसका सेवन केन्द्रीय नाड़ी मण्डल को असक्त करते हुए नीद उत्पन्न करता है। इसका शान्तिपरक माना जाता है। इन मादक द्रव्यों का प्रयोग चिकित्सीय दृष्टिकोण से उच्च रक्त चाप अपस्मार,अनिद्रा, शल्य चिकित्सा के पूर्व या बाद में रोगियों के अंग शिथिलीकरण या आराम के काम में लाया जाता है। इस श्रेणी में ट्रक्विलाइजर, बार्बिटयुरेटर आते है जो नसों एवं मांसपेशियों की क्रियाओं की गति को कम करते है। इसका कम मात्रा में सेवन दिल की धड़कन एवं सांस लेने की गति को कम कर देते है परन्तु ज्यादा मात्रा में सेवन व्यक्ति को उदासीन, आलसी, निष्क्रिय व चिड़चिड़ा बना देता है। इन पदार्थों से भावात्मक नियंत्रण कमजोर होता है तथा सोचने व ध्यान करने की शक्ति का ह्यास होता है तथा तीसरे स्थान पर उत्तेजक पदार्थ आता है जो केन्द्रीय नाड़ी मण्डल को क्रियाशील बनाते हुए अवसाद को कम तथा अनिद्रा को बढ़ाते है। इसके सेवन से थकान, आलस्य कम होता है। उत्तेजक मादक द्रव्य में ऐम्फेटामाइन (पेप गोली), कोकीन व कैफीन प्रमुख रूप से है। इनको मौखिक व इंजेक्शन दोनों द्वारा ग्रहण किया जाता है। अपराध जगत में ऐम्फेटामाइन– अपर्स या पेपपिल्स ड्रग के नाम से मशहूर है Coombs H.Robert and Ziedonies(1995)। चौथे मादक द्रव्य के रूप में तंद्राकारक पदार्थ को जाना जाता है जो उनीदा बनाना, चिन्ता समाप्त करना उदासी को मिटाना, प्रशन्न दिखाना, भूख न लगना तथा श्रेष्ठता की भावना उत्पन्न करते है। इनमें अफीम (स्मैक, ब्राउन शुगर, मारजुआना, मारफीन, पैथडीन) कैनाबिस (चरस, भांग,गाजा) प्रमुख है। हेरोइन एक सफेद पाउडर है जो मारफीन से बनाया जाता है। हेरोइन, मार्फीन, पेथेडीन और कोकीन कश या इंजेक्शन द्वारा शरीर में लिया जाता है जबकि अफीम व मारजुआना धुम्रपान या नाक से ऊपर खींचकर लिया जाता है। इसको बंद कर देने पर 8 से 12 घंटे बाद व्यसनी को कंपन, पसीना, ठिठुरन, दस्त, मरोड आदि प्रारम्भ हो जाता है जो 36 से 72 घंटे के मध्य शिखर पर होता है। 5 से 10 दिन के बाद इन लक्षणों में गिरावट आती है परन्तु कुछ सप्ताह तक इसके लक्षण बने रह सकते है। पाँचवें भ्रमोत्पादक पदार्थ होते है जिनके सेवन से व्यक्ति किसी भी चीज को वास्तविक रूप में न देख सुन कर नये तरीके से देखता सुनता है। व्यक्ति वास्तविकता से दूर सपने देखता है। इसके सेवन की सलाह डाक्टर कभी नहीं देते है। इस श्रेणी में रासायनिक पदार्थ LSD आता है जो इतना शक्तिशाली होता है कि इसके एक तोले से तीन लाख से अधिक डोज बनाया जा सकता है। यह सफेद गोली, क्रिस्टलीय तरल पदार्थ के रूप में उपलब्ध होता है। यह 8 से 10 घंटे तक प्रभावी होता है। LSD के बन्द करने से अतिभय अवसाद, तीव्र मानसिक असंयम पैदा हो जाता है, रजोरा सुरेश चन्द्र (2010)। छटे स्थान पर ताम्रकूटी या निकोटीन युक्त पदार्थ आते है। तम्बाकू की खेती भारत में कई स्थानों पर की जाती है। जिसके चौड़े पत्ते कड़वे होते है। इसका कोई चिकित्सीय उपयोग होता है परन्तु यह केन्द्रीय नाड़ी मंडल को उतेजित करता है तथा उबाऊपन को दूर करता है। इसमें सिगरेट, बीड़ी, गुटखा, नास आदि प्रमुख रूप से आते है इसका तीन प्रकार से सेवन धुम्रपान द्वारा, सूंघने से पान में रखकर या चूने के साथ मलकर किया जाता है। इसके अधिक मात्रा में सेवन से दिल की बिमारी, फेफड़े का कैंसर, मुह का कैंसर आदि हो सकता है। इनमें अवसादक, उतेजक, तंद्राकारक तथा भ्रमोत्पादक पदार्थ को मनोक्रियाशील पदार्थ की श्रेणी में रखा जाता है, आहूजा राम (2002)।

मादक द्रव्य व्यसन का दुष्प्रभाव– मादक द्रव्य व्यसन या नसीली दवाओं के सेवन इतनी मात्रा में करना या ऐसे तरीके से उपयोग करना जो व्यक्ति के लिए हानिकारक हो मादक द्रव्य दुरूपयोग के रूप में देखा जाता है। मादक द्रव्य द्वारा शारीरिक, सामाजिक व मनोवैज्ञानिक नुकसान तो होता ही है साथ ही साथ स्थानीय आधार पर दण्ड की व्यवस्थता भी निश्चित होती है, मोस्बी, सेंट लुइस (2002)। 1972 ई0 ने अमेरिकन साइकेट्रिक एसोशिएशन द्वारा वैधता, सामाजिक स्वीकार्यता व सांस्कृतिक परिचितता के आधार पर यह विश्लेषण किया गया कि सीमित संख्या में पदार्थों के अवैध, गैर चिकित्सकीय उपयोग पर लागू करने के लिए आरक्षित रखते है जिनमें अधिकांशतः सामाजिक मानदण्डों द्वारा माने जाने वाले तरीके से मानसिक स्थिति को बदलने के गुण होते है। कानून द्वारा अनुपयुक्त, अवांक्षनीय, धमकी देने वाला या विदेशी संस्कृति के रूप में परिभाषित किया गया है, ग्लासकोट रेमण्ड एम0 ससेक्स जेम्स एन0 जाफ जेरोम एच0 बाल जान, ब्रिल लियोन (1972)। 2017 में अवैध मादक पदार्थों के सेवन से होने वाली विकारों से सीधी तौर पर 585000 मौतें हुई है,रूड रोज ए0: एलेशायर नूह, जिबेल जान ई0 (Jan- 2016) । विश्व औषिधि रिपोर्ट 2019 के अनुसार : दुनिया भर में 35 मिलियन लोग नशीली दवाओं के उपयोग से संबंधित विकारों से पीड़ित है जिनमें किसी एक व्यक्ति को उपचार मिल

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-II, Issues-36, YEAR-April-June. 2025

पाता है, विश्व औषधि रिपोर्ट (2018)। मादक द्रव्य की प्रांसगिकता इस आधार पर और बढ़ती जा रही है कि 2000 से 2015 तक शराब के अलावा नशीली दवाओं के उपयोग से प्रत्यक्ष मौतों की दर में 60 % से अधिक की वृद्धि हुई। संयुक्त राष्ट्र संघ के एक सर्वेक्षण (2018) के अनुसार बुजुर्ग लोगों की अपेक्षा युवाओं में मादका द्रव्य के सेवन की प्रवृत्ति अधिक है जो अत्यंत चिंता का विषय बना हुआ है। ज्यादातर शोधकर्ताओं का मानना है कि युवाओं में 12–17 वर्ष के आयु वर्ग की अपेक्षा 18–25 वर्ष की युवाओं में नशे के सेवन करने की प्रवृति ज्यादा है। भारत में इसके सेवन की भयावहता और बढ़ती जा रही है।

मादक द्रव्य व्यसन से सम्बन्धित अध्ययन–

1. अन्तर्राष्ट्रीयः वर्तमान में मादक द्रव्य व्यसन विश्व की सबसे घातक समस्या है जिसके द्वारा अनेक युवा अनेक गम्भीर बिमारियों का शिकार हो रहे है।

संयुक्त राष्ट्र की महासभा द्वारा विश्व स्वस्थ्य संगठन से यह सिफारिश की गयी कि 2000 ई0 तक सभी राष्ट्र अपने यहाँ मादक द्रव्य 25% तक कम करें। मादक द्रव्य का सिडिंकेट काफी शक्तिशाली होता है जिसमें अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा स्वयं खतरे में दिख रही है क्योंकि इसका उत्पादन किसी एक देश में होता है, संसाधित दूसरे देश में, तस्करी तीसरे देश के माध्यम से होती है, क्रय चौथे देश के माध्यम से होता है तथा तस्करी का लाभ पाँचवे देश को मिलता है। इसके लिए अंताराष्ट्रीय पुलिस अपराध संगठन (इण्टरपोल) व विश्व सीमा शुल्क संगठन मिलकर कार्य कर रहा है। जॉन्सन एल0डी0, ओमैली पी0एम0, बैचमैन जे0जी0, सुलेनबर्ग जे0ई0 (2011) के अनुसार 48. 2 % छात्रों ने अपने जीवन में किसी न किसी समय अवैध दवा के उपयोग की बात कही 1 महीने में 12 वीं0 के 41.2 % छात्रों ने शराब के उपयोग करने की बात तथा 19.2 % छात्रों ने तम्बाकू या सिगरेट पीने की बात कही। बार्कर फिलिप जे0 (2003) मनोरोग एवं स्वास्थ्य नर्सिंग कला लंदन ने अपने अध्ययन में पाया कि 140 मिलियन लोग शराब पर निर्भर है जबकि 400 मिलियन लोग शराब से सम्बन्धित विकारों से ग्रसित है।

- सी0डी0सी0 न्यूज रूप प्रेस विज्ञप्ति (2010) (https:www.cdc.gov.media:) अनुसार संयुक्त राज्य अमेरिका में हाईस्कूल के 21 % छात्रों ने बिना डाक्टरी सलाह के दवाओं के सेवन की बात कहीं।
- द ग्लोबल ड्रग ट्रैड – BBC समाचार (2000) के अनुसार संयुक्त राष्ट्र के अनुमान के अनुसार हिरोईन, कोकीन, सियेरिक दवाओं 50 मिलियन से अधिक उपयेगकर्ता है।
- राष्ट्रीय औषधीय दुरूपयोग संस्थान U.S.A (17 SEP 2022) अत्यधिक खुराक से 70200 अमेरिकन नागरिकों की मुत्यु हुई जिसमें फेटेनाइल, सेथेटिक ओपिओआइड दवाओं से मौत का प्रतिशत सर्वाधिक रहा।

2. राष्ट्रीय– भारत में मादक द्रव्य के दुरूपयोग से संबंधित अध्ययन विद्यार्थियों में, औद्योगिक श्रमिको में, ग्रामवासियों का एवं गंदी बस्ती में रहने वाले लोगों का किया गया इससे सम्बन्धित अध्ययन को एकल अध्ययन, संयुक्त अध्ययन बहुकेन्द्रीय अध्ययन के रूप में विभाजित किया जा सकता है। डॉ0 मोहन (अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली) द्वारा 1976 में 7 शहरों का तथा 1986 में 9 शहरों का अध्ययन किया गया तथा परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा 1986 में 9 शहरों का अध्ययन किया गया तथा परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा 1996 में एक केन्द्रीय अध्ययन किया गया जिससे स्पष्ट होता है कि शहरों में शराब, सिकोट व निकोटिन को निकाल दिया जाय तो अन्य मादक द्रव्य का सेवन 4% से 6% के बीच होता है। तथा मादक द्रव्यों का सेवन पेशेवर व गैर पेशेवर रूप में अलग–अलग मिलता है। राम आहूजा (1986,जयपुर) ने अपने अध्ययन में पाया कि मादक द्रव्यों का सर्वोच्च सेवन वाणिज्य, कला व सामाजिक विज्ञान में तथा कम सेवन मेडिकल, इंजीनियरिंग व विधि में है। 90% विद्यार्थी मादक द्रव्य का सेवन सप्ताह में एक बार या इससे कम 9% नियमित रूप से तथा 1% विद्यार्थी मादक द्रव्य व्यसन के व्यसनी रहे जिसमें 6% से 10% विद्यार्थी शराब तम्बाकू को छोड़कर अन्य द्रव्य लेते है जिसमें 20% पीड़ा नाशक, 35% तंद्रकारक, 5% से 7% तक उतेजक तथा 1% विद्यार्थी भ्रमोत्पादक पदार्थ लेते है। औद्योगिक श्रमिकों पर गंग्रोड एवं गुप्ता (1970 नयी दिल्ली) ने शोध में पाया कि औद्योगिक श्रमिकों में मादक द्रव्य लेने का प्रचलन कॉलेज के विद्यार्थियों की अपेक्षा काफी कम है जिसमें ज्यादातर ने बिना किसी चिकित्सकीय नुक्से के इसका प्रयोग करना प्रारम्भ कर दिया था जिनकी आयु 20 वर्ष से 30 वर्ष वालों के बीच अधीक थी जिसमें 65% शराब 18% चरस लेने वालों की मात्रा अधीक थी। ग्रामीण क्षेत्र के अध्ययन में गुरमीत सिंह (1978,पंजाब) में यह प्राप्त होता है कि 29% से अधिक व्यक्ति 10 वर्ष से अधिक समय से मादक द्रव्य का सेवन कर रहे थे जिनमें 40% तंबाकू, 26% शराब, 19% अफीम, 20% गाँजा व भांग का सेवन कर रहे थे। सेठी व त्रिवेदी (1977) ने ग्रामीण समाज के अध्ययन में पाया कि मादक द्रव्य व्यसन की दर 25% थी जिनमें 82% शराब, 16% गांजा व चरस तथा 11% अफीम का सेवन करते थे। परिवार कल्याण मंत्रालय दिल्ली द्वारा करवाए गए सर्वेक्षण (1995) के अनुसार मादक द्रव्य व्यसन करने वालों की अधिक संख्या 44% युवा है। इस अध्ययन से यह भी साफ होता है कि मादक द्रव्य व्यसन बड़े शहरों से छोटे शहरों तथा बड़े तथा सीमांत राज्यों से छोटे राज्यों की तरफ अपना पैर फैला रहे है। वर्तमान उत्तराखण्ड राज्य भी दूसरा उड़ता पंजाब बन रहा है जिसमें ड्रग की आपूर्ति बरेली के रास्ते निरंतर बड़ रही है।

वर्तमान भारत में षहरों के साथ–साथ गांवों में भी मादक द्रव्य व्यसन तेजी के साथ बढ़ रहा है। उपरोक्त अध्ययनों से यह तथ्य प्रकाष में आता है कि मादक द्रव्य व्यसन का सेवन युवाओं के साथ–साथ किषरों में भी तेजी के साथ बढ़ रहा है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. Paul L.Scheff Jr (2002): Opium and its Alkaloids: American Jiournal of Pharmaculative Education, 21 oct 2007.
2. Philip Robson (1999): Forbidden Drugs, Oxford University Press, U.K, ISBN: 978-0-19-262955-5.
3. Attman AJ, Albert DM, Fournier GA (1985): Cocaine's use in opthabmology, Our 100 Years heritage survey opthmol 29 (4), 300-6; D.O.I- 10:1016/0039-6257 (85) 90153-5.
4. Humphrey AJO' Hagan D (2001): Trapane Alkaloid Giosenthesis, Acentury old Problem Not Prod Rep. 18 (5): 494-502 ,D.I.O- 10:1039/6001713m.

5. Coombs H.Robert and Ziedonies(1995) Handbook on Drug abuse Prevention , Prentice Hall,Canada.
6. रजोरा सुरेश चंन्द्र (2010): समकालीन भारत की सामाजिक समस्याएँ, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली।
7. आहूजा रामः सामाजिक समस्याएँ, रावत पब्लिकेशन जयपुर (2002), पृ0– 407–32.
8. केरिस ओकले रे चार्ल्स (2002), ड्रग समाज एवं मानव व्यवहार (5वाँ संस्करण) मैकग्रा हिल, बोस्टन, यू0ए0 ISBN-978–0072319637.
9. ग्लासकोट रेमण्ड एम0 ,ससेक्स जेम्स एन0 ,जाफ जेरोम एच0 बाल जान, ब्रिल लियोन (1972): नशीली दवाओं के दुरूपयोग का उपचारः कार्यक्रम, समस्याए, संभावनाए (रिपोर्ट), संयुक्त सूचना सेवा अमेरिकन साइकिएट्रिक एसोसिएशन और नेशनल एसोसिएशन फार मेंटल हेल्थ।
10. रूड रोज ए0, एलेशायर नूह, जिबेल जान ई0 (jan 2016): ड्रग एवं ओपिओइड ओवरडोज से होने वाली मौतों में वृद्धि संयुक्त राज्य अमेरिका 2000–2014, रोग के नियंत्रण एवं रोकथाम सेंटर 164 (50–51): 1378–82, 4 मार्च 2017.
11. केरिस ओकले रे,चार्ल्स (2002) ड्रग समाज एवं मानव व्यवहार (9 वाँ संस्करण), मैग्रा हिल,बोस्टन(यू0के0) ISBN: 978-0072319637.
12. राय, नीरज कुमारः मादक द्रव्य व्यसन का समाजशास्त्रीय विशलेषण Journal of Emerging Technologies and mnovative Research.
13. WWW. Jetir.org 1SSN 2349-5162.
14. 13- World Drug Report 2023.(2023): United Nations:office on drugs and Crime.
15. https://www.unodc.org/undoc/en/data-and-analysis/world-drug-report-2023.html.
16. 14- Janetta Rebold Benton,&Diyanni,R. (2012):Arts and culture: and Introduction to the humanities. Prentice Hall.
17. 15- Drug,in(2024a).Drug Abuse Research in Historical Perspective. Nih.gov;National Academies Press(US).
18. https://www.ncbi.nlm.nih.gov/books/NBK232965/
19. 16- Drug,I.(1996). pathway off addiction:opportunities in drug abuse research. National Academy Press, Washington (U.S.).

*****